Chapter-1

प्रथम अध्याय

"सितार की उत्पत्ति"

यह अध्याय शोधकर्त्री द्वारा 25 जून 1984 को आकाशवाणी, अहमदाबाद से प्रसारित किया जा चुका है ।

Introduction

प्राक्कथन

सितार सूक्ष्मतम एवं कोमलतम भावनाओं को उजागर करने का एक सशक्त माध्यम है । सितार की उत्पत्ति के सम्बन्ध में अनेक भ्रान्त धारणाओं के प्रकाशित होने के कारण मैंने इस विषय को ही अपने शोधकार्य के लिए चुना । इस शोधकार्य में मैंने 'सितार की उत्पत्ति' जो एक अनुबूझ पहेली बनी हुई थी, उसका समाधान ढूंढ निकालने का प्रयत्न किया है । इस शोधकार्य में सितार की उत्पत्ति से सम्बन्धित जो जानकारी दी गयी है, वह पूर्णत: मौलिक है । आजतक सितार के सम्बन्ध में आधारहीन तथ्यों का ही प्रचार होता रहा, परन्तु मैंने इस शोधकार्य में जो निष्कर्ष दिए हैं, वे पूर्णत: प्रामाणिक हैं ।

सितार की उत्पत्ति विषय इतना अधिक विस्तृत है जिसका तथ्य केवल 'सितार वाद्य' के विषय में बताने से पूर्णत: सम्मुख नहीं आता । इस विषय की जड़ को पकड़ने के लिए सितार के बाज एवं घरानों का अध्ययन करना भी अनिवार्य हो जाता है । विगत दो-तीन शतकों में सितार के बाज एवं घराने के क्षेत्र में पर्याप्त परिष्कार हुआ है और इसके फलस्वरूप इसके विभिन्न घराने बने । इस शोधकार्य में बाज एवं घराने से सम्बद्ध सितार वादकों का संक्षिप्त जीवन-परिचय तथा उनकी वंशावली का वर्णन एक नवीन दृष्टिकोण से किया गया है ।

सितार से संबंधित कोई भी शोधकार्य तब तक पूर्ण नहीं कहा जा सकता जब तक कि उसके सौन्दर्यात्मक तत्वों, जिनकी वजह से सितार एक प्रमुख वाद्य बना, का

अध्ययन न कर लिया जाय । इस शोधकार्य में सर्वप्रथम मनोवैज्ञानिक जांच के नियमों के आधार पर सितार के सौन्दर्यात्मक तत्वों का अध्ययन किया गया है । इससे पूर्व इस विषय पर भी कोई कार्य नहीं किया गया था ।

यह शोधकार्य पी-एच०डी० की उपाधि के लिए एम०एस० यूनिवर्सिटी आफ बड़ौदा, को प्रस्तुत किया जा रहा है तथा इस प्रकार का काम बड़ौदा विश्व-विद्यालय अथवा अन्य किसी विश्वविद्यालय में किसी भी उपाधि के लिए इससे पूर्व प्रस्तुत नहीं किया गया है ।

Lovely Sharma

-- श्रीमती लवली शर्मा

--शोधकर्त्री